सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
समग्र विकास की ओर अग्रसर

"आलेख"

स्त्री को स्त्री का दुश्मन क्यों कहा जाता है? बहुत गहरी बात

–डॉ. शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

सर्वप्रथम तो यह समझने की नितांत आवश्यकता है कि यह दुश्मनी क्या होती है? यह कैसे उत्पन्न होती है? किसी अनजान, असंबंधित व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति से भय, रोमांच या आकर्षण तो संभव है। किंतु दुश्मनी संभव नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति जो अपने से संबंधित है या अपने जैसी है, से ही प्रेम या दुश्मनी होना संभव है।

जब हम किसी व्यक्ति विशेष को देखते हैं। और उस व्यक्ति से अपनी तुलना करने लगते हैं और उसे बड़ा या छोटा मान लेते हैं। इससे मन में दुर्भाव पैदा होता है। और ये दुर्भाव रोष, क्रोध पैदा करता है, तभी इस दुश्मनी की संभावना पैदा होती है।

प्रायः हर संदर्भ में स्त्री को ही स्त्री का दुश्मन कहा जाता है। पुरुषों को नहीं। अब प्रश्न उठता है कि पुरुषों को क्यों नहीं कहा जाता?

मनोवैज्ञानिकों और समाज शास्त्रियों ने इस विषय को लेकर तरह–तरह की विवेचना की हैं। पहले तो समझ लें कि पुरुष जाति में भी नव रसों की संकल्पनाएं होती तो हैं। लेकिन स्त्री जितना गहराव, विस्तार और उभार पुरुष जाति के बूते से बाहर हैं। पुरुष भी अपनी संतान से ममता और प्रेम रखता है। परंतु स्त्री के प्रेम की क्वालिटी, क्वांटिटी और उसका गहराव पुरुष से बहुत ऊपर है। इसी प्रकार आप केवल एक नहीं हर रस की विवेचना करेंगे तो यही पाएंगे कि स्त्री और पुरुष में भावों को लेकर स्त्री की तुलना पुरुष से करना ठीक ही नहीं है। क्योंकि दोनों के अंदर प्रकृति जनित पूर्णतयः अलग–अलग भाव हैं। अतः स्त्री और पुरुष की तुलना यदि हम गहराई के बिंदु को लेकर करें तो ऐसा लगता है कि मानों हमने नींबू और तरबूज के बीच में तुलना कर दी हो।

नींबू जिसका सबसे बड़ा गुण खट्टा करना है और तरबूज जिसका सबसे बड़ा गुण मीठा होना है। दोनों के आकार में भी काफी अंतर है। किंतु दोनों के अंदर प्रकृति जनित गुण अवश्य मायने रखते हैं। इसीलिए स्त्री और पुरुष में तुलना करना ठीक ही नहीं है।

स्त्री क्या सोच रही है? क्या कर रही है? क्या कर सकती है? उसको केवल और केवल स्त्री ही समझ सकती है। स्त्री के जन्म लेने से उसके मां बनने और उसके पश्चात प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करने से लेकर मृत्यु तक उसके अंदर शारीरिक और मानसिक रूप से हर अवस्था में परिवर्तन होते हैं। यह परिवर्तन पुरुष में होते है। किंतु इसकी व्यापकता पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में असीमित तथा अवर्णनीय होती है।

ममता, दया, संवेदना, भावुकता, प्रेम एवं व्याकुलता यह सब गुण स्त्री जाति को परमात्मा के घर से ही प्राप्त हुए हैं। मानो परमात्मा ने स्त्रीधन देकर भेजा हो। और पुरुष साहसी, निडर, बलवान और कठोर। इसलिए दुश्मनी किस बात की?

हमारे यहां तो कहा भी जाता है कि ***"त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम।' 'देवो ना जानाति कुतो मनुष्यः।।'*** अभी तक बहुत से लोग इस श्लोक की विवेचना बहुत गलत ढंग से करते हैं।

वास्तव में स्त्री और उसकी चारित्रिक अभिलक्षण को जानना इतना आसान नहीं है तो स्त्री और पुरुष की दुश्मनाई का मतलब ही क्या? लेकिन स्त्री, दूर से ही हर व्यक्ति को पढ़ लेती है। तो स्त्री–स्त्री को भी समझ सकती है। और वह उससे दोस्ती या बहुत बार आपस में दुश्मनी कर लेती हैं। इसीलिए शायद कहा जाता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है।

यहां पर मैं अपने भाइयों से कहना चाहूंगी कि बड़े–बड़े ऋषि, मनीषी जब स्त्री को नहीं समझ सके तो आपको भी स्त्रियों को समझने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। प्रश्न तो यह है कि जब स्त्री, इतनी बुद्धिमान है तो दूसरी स्त्री की परेशानी को क्यूँ नहीं समझती?

अभी कल ही एक घटना सुनी। 80 वर्षीय वृद्धा अपने घर के सोफे पर मृत पाई गई। पुलिस के अनुसार वृद्धा की मृत्यु एक दो दिन पहले हुई है। ऐसा सुनने में आया है कि उस वृद्धा का भरा–पूरा परिवार है। वृद्धा का एक पुत्र उनके साथ वहीं रहता है। दूसरा पुत्र चिराग दिल्ली में रहता है। उनकी एक बेटी भी है। पुत्रों का तो मुझे समझ में आता है। लेकिन दोनों बहुओं में से एक बहू भी एक दूसरी स्त्री (वृद्धा) जो रिश्ते में उसकी सास लगती है,की तीमारदारी करने के लिए उपलब्ध नहीं हो सकी।

संपूर्णा द्वारा संचालित परामर्श केंद्र में अक्सर परिवारों के झगड़े के केस दिन–प्रतिदिन आते रहते हैं। और जब हम इन की विवेचना करते हैं तो पाते हैं कि स्त्री सब कुछ समझ होने के बाद भी, समझने का प्रयास नहीं करती है। वह अपने जैसी को ही बुरा कहती है।शायद इसीलिये प्रख्यात हो गया कि स्त्री, स्त्री की दुश्मन होती है।

संपूर्णा के माध्यम से हमारी टीम परिवारों में रिश्तों को सुधारने का काम करती हैं। संबंधों की विवेचना करना हमारा प्रतिदिन किए जाने वाला काम है। परंतु जब कोई स्त्री किसी स्त्री की व्यथा को ना समझने की बात करती है तो सच में बहुत दुःख होता है। किसी स्त्री को गर्म रोटी खिलाने का सुख अनुपम है, पुरुषों को तो सभी गर्म रोटी खिलाते हैं। पर अनेक बार हम ये गलती करते हैं।

न्यूटन के क्रिया और प्रतिक्रिया के नियम को जितना स्त्री समझ सकती है, मैं दावे से कह सकती हूं कि पुरुष वर्ग उतना नहीं समझ सकता। मैं स्वयं भी एक स्त्री हूं और स्त्री होने के नाते मैं सभी से यही अनुरोध करूंगी कि रिश्तो को अच्छी तरह समझें। रिश्तो को टूटने ना दें। रिश्तों में प्रगाढ़ता लाएं। स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है इस कहावत को समाप्त करके स्त्री ही स्त्री की मित्र होती है, को प्रख्यात करें।

———————————————————————————